पीटर और भेड़िया

चित्र: पीटर स्टीवंसन



पीटर और भेड़िया

चित्र: पीटर स्टीवंसन





एक बार की बात है, पीटर नाम का एक लड़का था. वो अपने दादाजी के साथ हरे घास के बड़े मैदान के पास एक घर में रहता था. वहाँ पास के जंगल में हर तरह के खतरनाक जानवर थे.

"पीटर, तुम्हें कभी भी अकेले घास के मैदान में नहीं जाना," उसके दादाजी ने एक दिन उसे चेतावनी दी. "भूखा भेड़िया जंगल से बाहर आ सकता है और तुम्हें खा सकता है."

पीटर डरता नहीं था. एक धूप वाली सुबह, उसने अपने बगीचे का गेट खोला और घास के मैदान में चला गया.





एक छोटी चिड़िया एक पेड़ पर ऊँची टहनी पर बैठी थी.

"नमस्ते, पीटर!" छोटी चिड़िया ने चहकते हुए कहा. "तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो?"

"यह बहुत ही सुहावनी सुबह है," पीटर ने कहा, "मैं टहलने जा रहा हूँ."

तभी एक बत्तख अपने सपाट, जालीदार पैरों पर लड़खड़ाती हुई आई. वह खुले गेट से पीटर के पीछे-पीछे आई और उसने पास के तालाब में तैरने का फैसला किया.



बत्तख को देखकर, छोटी चिड़िया घास पर उड़ी. "तुम इस तरह क्यों टहल रही हो?" उसने बेरुखी से बत्तख से पूछा. "तुम मेरी तरह उड़ती क्यों नहीं?"

"उड़ने की क्या ज़रूरत है?" बत्तख ने कहा. "देखो, मैं तैर सकती हूँ!" और उसने अपने पंख हिलाए और तालाब में गोता लगाया. "तुम भी अंदर आओ," उसने पुकारा. "पानी बहुत प्यारा है!"

"तुम मज़ाक कर रही हो," छोटी चिड़िया ने चहकते हुए कहा. "मुझे तैरना नहीं आता."



"तुम्हारा मतलब है कि तुम तैर तक नहीं सकती हो," बत्तख ने तिरस्कारपूर्वक कहा.

छोटी चिड़िया गुस्से से उछल-कूद करने लगी.



बत्तख पानी में इधर-उधर तैरने लगी. पीटर लंबी घास में खड़ा था और वो दोनों पक्षियों को आपस में बहस करते हुए देख रहा था.





अचानक पीटर ने लंबी घास को इधर-उधर हिलते हुए देखा. एक बड़ी धारीदार बिल्ली, छोटी चिड़िया की ओर रेंग रही थी.

बिल्ली ने खुद से कहा, "वो चिड़िया बहस करने में इतनी व्यस्त है कि वो मुझे कभी नहीं देख पाएगी." और फिर वह अपने मखमली पंजों पर चिड़िया की ओर रेंगती हुई गई.



"सावधान!" पीटर ने चिड़िया को चेतावनी दी. जल्दी ही चिड़िया एक पेड़ पर उड़ गई.

बत्तख तालाब के बीच से बिल्ली पर गुस्से से चिल्लाई.



बिल्ली गुस्से में दूर चली गई. वह घास में बैठ गई और उसने कहना शुरू कर दिया. "देखो मुझे कोई परवाह नहीं है. मैं अगली बार उस चिड़िया को ज़रूर पकड़ लूँगी."

तभी दादाजी घर से बाहर आए. जब उन्होंने पीटर को घास के मैदान में देखा, तो वे बहुत गुस्सा हुए.

"क्या होता अगर भेड़िया जंगल से बाहर आ जाता?" दादाजी ने पूछा. "तब तुम क्या करते?"



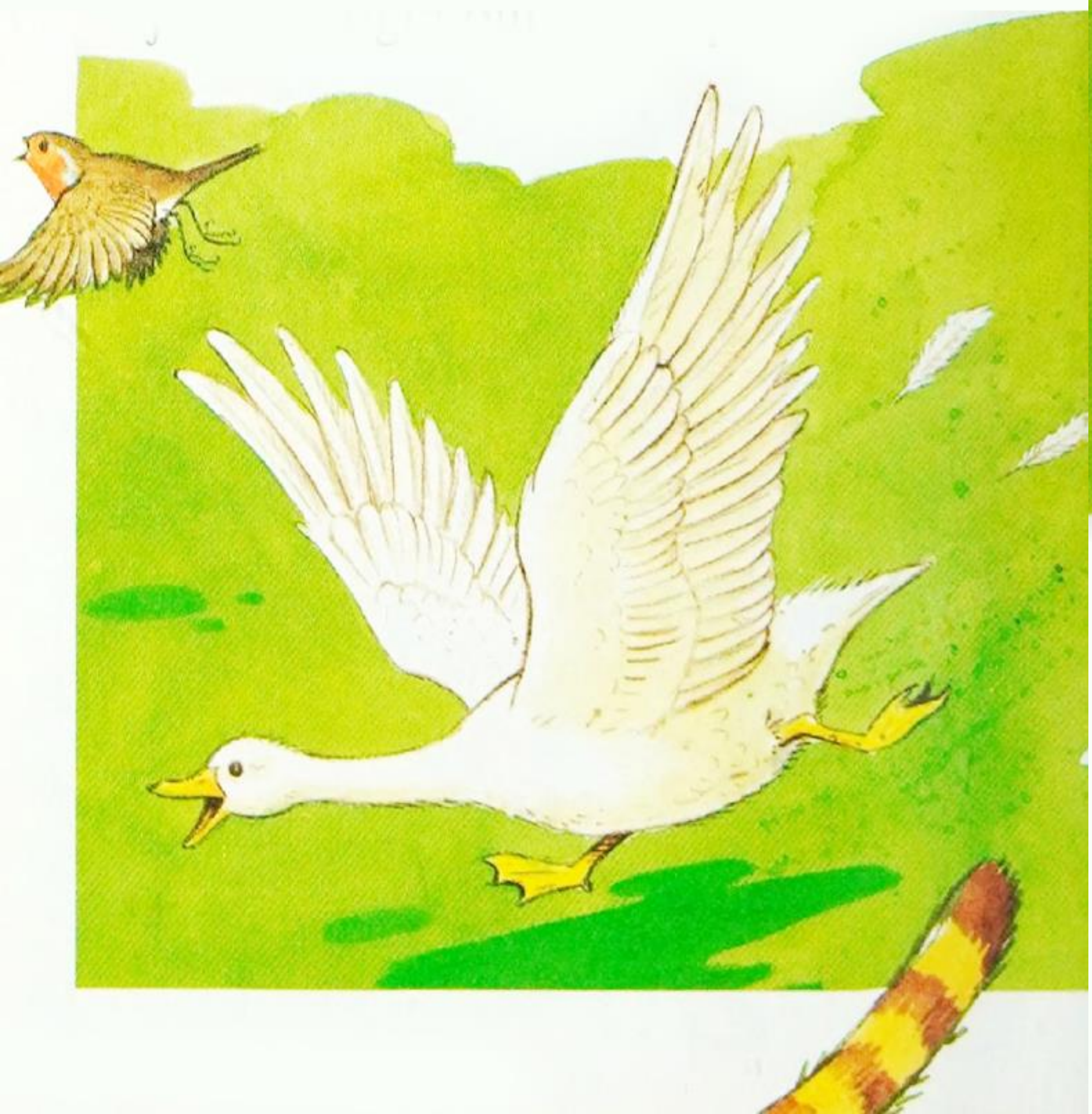
पीटर ने जवाब नहीं दिया. उसे खेद था कि उसने दादाजी की अवज्ञा की, लेकिन वो वास्तव में यह नहीं समझ पा रहा था कि आखिर वो सारा हंगामा किस बात पर था.

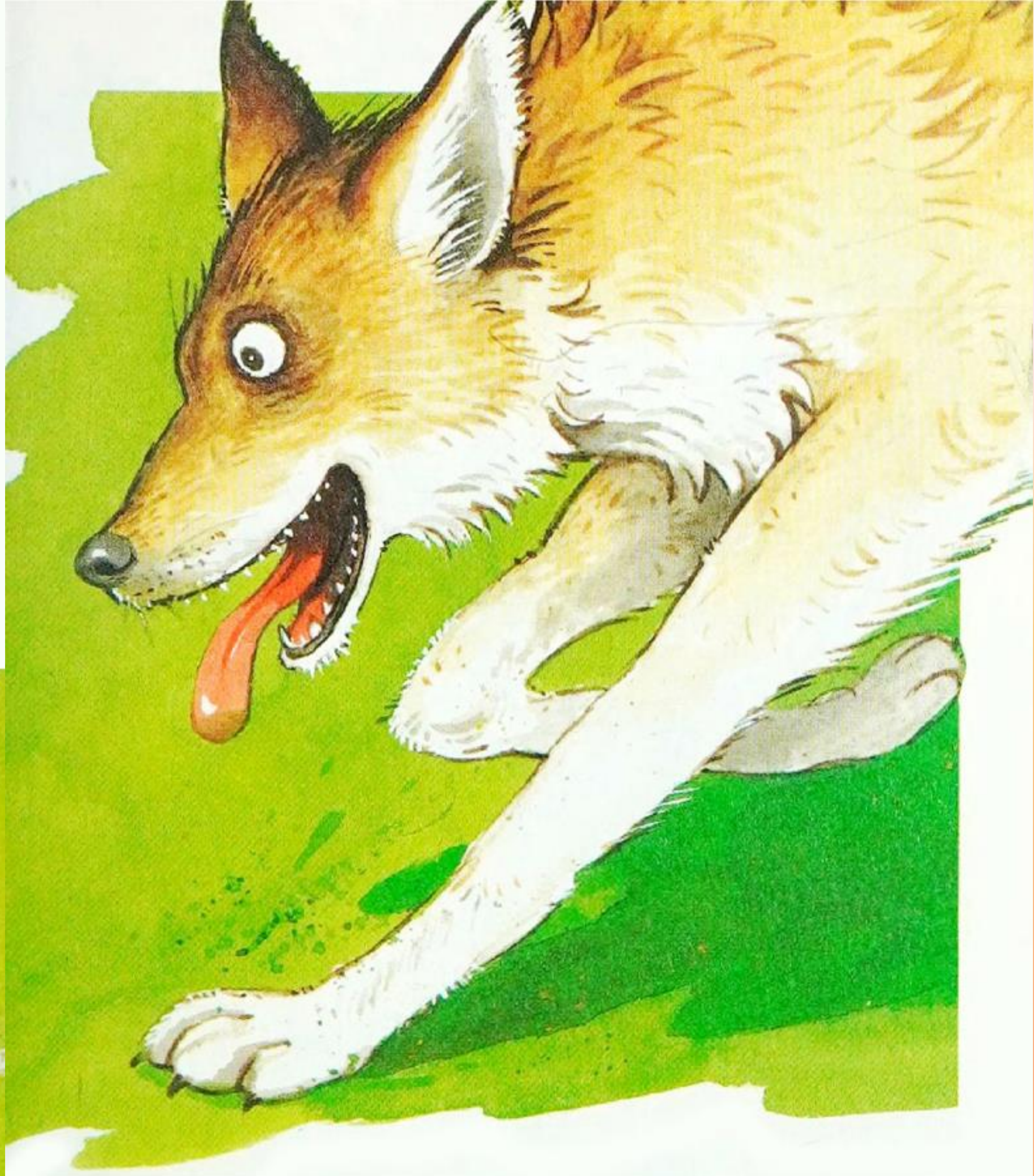
दादाजी पीटर को वापस बगीचे में ले गए और उन्होंने गेट बंद कर दिया.



पीटर के घास के मैदान छोड़ते ही, एक बड़ा भूखा भेड़िया जंगल से बाहर आया.

चिड़िया एक पल में उड़कर पेड़ की चोटी पर जा पहुंची. बिल्ली भी पेड़ पर चढ़ गई. बत्तख इतनी डर गई कि वह तालाब से बाहर कूद गई.





भेड़िये ने बत्तख को देखा और वो उसके पीछे भागा. बत्तख जितनी तेज भाग सकती थी, भागी, लेकिन भेड़िया उससे भी तेज भागा और उसने जल्द ही उसे पकड़ लिया.

एक ही डकार में भेड़िया बत्तख को निगल गया!



बिल्ली और छोटी चिड़िया एक साथ एक ऊँची शाखा पर बैठी थीं. भेड़िया लालच भरी आँखों से उन्हें देखते हुए पेड़ के चारों ओर चक्कर लगाता रहा.

जब पीटर गेट के पीछे से देख रहा था, तो उसे एक बहुत अच्छा विचार आया. वो समझ गया कि वो बिल्ली और चिड़िया को कैसे बचाएगा.



सबसे पहले पीटर ने एक लंबी रस्सी ढूँढ़ी. फिर वह बगीचे की दीवार पर चढ़ गया. जब वह सुरक्षित रूप से ऊपर बैठ गया, तब वो रस्सी में एक फंदा बनाने लगा.

पीटर ने चिड़िया को आवाज़ दी, "नीचे उड़ो और भेड़िये के सिर के चारों ओर मँडराओ. लेकिन तुम उसे तुम्हें पकड़ने मत दो!"





इसलिए छोटी चिड़िया गोल-गोल उड़ती रही, लगभग अपने पंखों से भेड़िये के सिर को छूती हुई. भेड़िये ने पक्षी पर गुस्से से झपट्टा मारा और कुछ ही देर में उसे चक्कर आने लगा.



पीटर ने जल्दी से रस्सी में फंदा बनाना ख़त्म किया. उसने सावधानी से रस्सी के फंदे में भेड़िये की पूंछ को फँसाया और फिर पूरी ताकत से खींचा.

भेड़िया भागने की कोशिश में बेतहाशा उछलने लगा. लेकिन चतुर पीटर ने रस्सी का दूसरा सिरा पेड़ से बांध दिया. भेड़िया जितना उछलता, रस्सी उतनी ही कसती जाती. फिर भेड़िया भाग नहीं सका.







अचानक कुछ शिकारी, जो भेड़िये की तलाश कर रहे थे, जंगल से बाहर आए. उन्होंने अपनी बंदूकें उठाईं और गोली वे चलाने के लिए तैयार हुए.

"गोली मत चलाना!" पीटर चिल्लाया. "चिड़िया और मैंने भेड़िये को पकड़ा है. अब हम उसे चिड़ियाघर ले जाएंगे."

शिकारियों ने दीवार पर बैठे पीटर और रस्सी के सिरे पर फंसे भेड़िये को देखा. उसे देखकर वे हैरान रह गए!



उस दोपहर, पीटर ने चिड़ियाघर में एक विजयी जुलूस का नेतृत्व किया. पीटर के पीछे-पीछे शिकारी भी आए, जो भेड़िये को अपने साथ लाए. दादाजी बिल्ली के साथ पीछे-पीछे आए. और छोटी चिड़िया उन सबके आगे उड़ी.

जहाँ तक बत्तख की बात है वो भेड़िये के पेट के अंदर से ही लगातार बक-बक करती रही. "चिंता मत करो," पीटर ने उससे कहा. "मुझे यकीन है कि चिड़ियाघर के रखवाले तुम्हें जल्द आज़ाद कर देंगे."

और उन्होंने वो किया भी.



